एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

राजस्थान में जैतून की खेती

(*जितेंद्र सिंह शेखावत[1], अमृतपाल सिंह[2] एवं योगेश कुमार[3])
[1]रिसर्च एसोसिएट, आईसीएआर- के. शु. बा. अ. संस्थान, बीकानेर
[2]वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता, कृषि महाविद्यालय, एस. के. आर. ए. यू., बीकानेर
[3]एमएससी कृषि, कीट विज्ञान, ज. ने. कृ. वि. वि., जबलपुर
संवादी लेखक का ईमेल पता: singh.jeet04@gmail.com

जैतून (*Olea europea*) की खेती मुख्यत: भूमध्यसागर के आस-पास के देशों इटली, मिश्र, तुर्की, पुर्तगाल, ट्यूनिशिया, मोरक्को, अलजीरिया, सीरिया, जॉर्डन, साईप्रस एवं ईजरायल में हो रही है। समृद्धि एवं शान्ति का प्रतीक जैतून उपोष्ण जलवायु का " लम्बी उम्र वाला फलदार सदाबहार पौधा है। इसे फलत: (Fruiting) के लिए ठंडे तापक्रम की आवश्यकता पड़ती है। इसका पौधा 3-10 मीटर या इससे अधिक ऊँचाई का होता है।

जैतून के वानस्पतिक प्रसारण विधि से उत्पादित किये गये पौधों में 4-5 वर्ष से फलत् प्रारम्भ होकर 7 से 8 वर्ष की उम्र में अच्छा उत्पादन शुरू हो जाता है। जैतून के पौधे में हल्का सफेद रंग के व 15 से 30 के पुष्पगुच्छ के रूप में होते हैं। इसका फल मोम की तरह चिकनी सतह वाला शुरू में हल्के हरे से पीले रंग का व पकने पर गहरे लाल, बैंगनी या काले रंग का हो जाता है। फल को पूरी तरह पकने में 6 से 8 माह का समय लगता है, लेकिन ताजा उपयोग में लिये जाने वाले फल (Table Purpose Fruits) जब सख्त होते हैं तब ही तोड़ लिये जाते हैं। जैतून के पौधों में प्रतिवर्ष नियमित रूप से कटाई-छटाई नहीं करने पर एकान्तरित फलन् हो जाता है।

उपयोग व पोषण गुणवत्ता : जैतून के तेल का मुख्य उपयोग खाने में किया जाता है। फल को आचार व सलाद के रूप में भी उपयोग किया जा रहा है। जैतून के तेल में मुक्त पोली अनसेच्युरेटेड फैट्टी एसीडस की प्रचुरता के कारण हृदय के लिए अच्छा माना जाता है।

राजस्थान में जैतून: एक चुनौती- हमारा संकल्प : राजस्थान में जैतून की खेती की विपतुल संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुये इसकी खेती का प्रयोग करने हेतु राजस्थान सरकार द्वारा निजी एवं सरकारी क्षेत्र की संयुक्त भागीदारी में दिनांक 19 अप्रैल, 2007 को "राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड" का गठन कम्पनी एक्ट 1956 में किया गया। जैतून की सात किस्में क्रमशः बरनिया, अरबिक्युना, कोरटिना, फिशोलिन, पिकवाल, कोरनियकी एवं फ्रोन्टोय किस्म के पौधे ईजरायल से आयात किये। हार्डनिंग पश्चात् राजकीय फार्मों के 182 हेक्टेयर क्षेत्र में जैतून के पौधों का रोपण मार्च 2008 से प्रारम्भ किया जाकर अक्टूबर 2010 तक किया गया।

गड्ढे का आकार: जैतून की रोपाई के लिए 60 x 60 x 60 सें.मी. आकार के गड्ढे पर्याप्त रहते हैं। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में गड्ढों की गहराई अधिक रखनी चाहिए। प्रत्येक गड्ढे में 10 से 15 किलो सड़ी गोबर की खाद या 3 किलो वर्मी कम्पोस्टर मिट्टी में मिलाने के बाद पौधों की रोपाई करनी चाहिए। दीमक के प्रभाव वाले

क्षेत्रों में कीटनाशकों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिप्सम की मात्रा भूमि की जाँच रिपोर्ट के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए।

कटाई छंटाई (Training & Pruning): जैतून के पौधे से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए इसके पौधों को सही आकार देना आवश्यक है। इसके लिए समय-समय पर कटाई छंटाई करना जरूरी है। आमतौर पर पौधे को 'कप' का आकार दिया जाता है। इसके लिए पौधे को जमीन की सतह से 70 सें. मी. की ऊँचाई तक कृन्तन करते हैं। पहले वर्ष में मुख्य तने के चारों और शाखाऐं तैयार करने पर महत्व दिया जाता है। आगे के वर्षों में बहुत हल्की कटाई-छंटाई, केवल टूटी हुई या आपस में गुंथी हुई शाखाओं को हटाने के लिए की जाती है। कटाई-छंटाई में मुख्य शाखाओं से छेड़छाड़ नहीं की जाती है। कटाई-छंटाई का उद्देश्य पौधे के विभिन्न भागों तक पर्याप्त प्रकाश व फलन वाली शाखाओं का पर्याप्त विकास करना है।

पोषक तत्त्व प्रबन्धन : जैतून के पौधे की पोषक तत्त्वों की आवश्यकता उसकी उम्र, अवस्था, जलवायु एवं भूमि में पोषक तत्त्वों की उपलब्धता आदि पर निर्भर करती है। पोषक तत्त्व के उपयोग से पूर्व विशेषज्ञ की सलाह ली जानी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण: जैतून के पौधा रोपण के पश्चात् समय-समय पर खरपतवार नियंत्रण करते रहना चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के समय जैतून के पौधों की जड़ों या तने को हानि नहीं होनी चाहिए। पौधों की कतारों के मध्य की खाली भूमि में खरपतवार नियमित रूप से निकालते रहना चाहिए। इस हेतु खरपतवारनाशी रसायन "ग्लायफोसेट" का उपयोग भी किया जा सकता है। इस दवा से हरे पौधे नष्ट हो जाते हैं, अतः इसके उपयोग के समय सावधानी रखनी चाहिए ताकि रमायन जैतून के पत्तों पर न गिरे। ग्लायफोसेट का उपयोग करते समय पौधों के तनों को पोलिथीन शीट या पाईप से ढक देना चाहिए।

जैतून के फलों की तुड़ाई: फलों की तुड़ाई पारम्परिक व यांत्रिक पद्धति से की जा सकती है। यांत्रिक पद्धति में टेक्ट्रर चालित मशीनों का उपयोग किया जाता है। पारम्परिक पद्धति में जैतून के पेड़ के नीचे जाल (नेट) बिछा दिया जाता है। फलों को तोड़ने पर फल जाल पर गिरते हैं, जिन्हें एकत्र कर लेते हैं। बांस की सहायता से शाखाओं को हिलाकर भी जैतून के पके फलों को गिराया जाता है।

उपज की स्थिति : तीन वर्षों से अधिक उम्र के 5 किस्म के पौधों से जैतून के फल प्राप्त किये गये हैं। जैतून के पौधों से तेल का परीक्षण रूप से तेल निकाला गया, जिसमें जैतून के तेल की मात्रा 12-14 प्रतिशत तक आंकी गयी।

जैतून की नर्सरी : कृषकों को उच्च गुणवत्तायुक्त जैतून के पौधे उपलब्ध कराने हेतु अन्तरराष्ट्रीय मानको की अत्याधुनिक नर्सरी की स्थापना राज्य सरकार द्वारा जयपुर जिले में विकसित किये गये सेंटर ऑफ एक्सीलेन्स, बस्सी में की जा चुकी है। नर्सरी द्वारा जैतून की 7 किस्में क्रमश: बरनिया, अरबिक्युना, कोरटिना, फिशोलिन, पिकवाल, कोरनियकी एवं फ्रोन्टोय के पौधे मृदा रहित मीडिया में उत्पादित किये जा रहे हैं। 30 से. मी. से 50 से. मी. की ऊँचाई होने पर ये पौधे खेत में रोपने योग्य हो जाते हैं।